IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अध्यापन वृत्ति में नीतिशास्त्र

डॉ0 अभिषेक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
गनपत सहाय पी0जी0 कॉलेज, सुलतानपुर

एवं

डॉ0 पूजा मिश्रा
(डी0 फिल0)
दर्शनशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज

प्रस्तावना (Abstract)– वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के इस दौर में भौतिकता हावी है और मूल्यपरक समाज का क्षरण हो रहा है। समस्या यह है कि इस क्षरण को रोका कैसे जाय? तो इसके समाधान में शिक्षा एक कारगर उपाय के रूप में हमारे समक्ष दिखाई देती है। कोठारी आयोग का कहना है कि हिन्दुस्तान की नियति शिक्षण कक्षाओं में निर्मित होती है। इस हेतु शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षण को एक श्रेष्ठ वृत्ति माना गया है। एक शिक्षक बेहतर मानव संसाधन, जिम्मेदार नागरिक और सभ्य समाज का निर्माण करता है, इसलिए इस वृत्ति में जवाबदेही, सत्यनिष्ठा और सेवा भावना आवश्यक हो जाती है। यही कारण है कि उनके लिए वृत्तिक नीतिशास्त्र (Professional Ethics) का पालन आवश्यक हो जाता है, जिससे वे संबंधित संस्था, विद्यार्थी, समाज और राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। इससे एक नैतिक प्रतिमान स्थापित होगा जिससे अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य नैतिकता के उन प्रतिमानों की व्याख्या और परीक्षा करना है जो आदर्श अध्यापन वृत्ति के लिए आवश्यक है।

मुख्य शब्द (Key words): वृत्तिक नीतिशास्त्र, अध्यापन वृत्ति, नैतिकता, आचार संहिता।

वृत्तिक नीतिशास्त्र (Professional Ethics) : ''प्रोफेशनल एथिक्स'' को समझने के क्रम में सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक होगा कि दोनों शब्दों का पृथक्–प्थक् अर्थ क्या है? प्रोफेशनल शब्द, प्रोफेशन शब्द का विशेषण है। प्रोफेशन उन अनुशासित व्यक्तियों का एक समूह है जो नैतिक मानकों का पालन करते हैं, जो किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से विशेष ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण और अनुसंधान में दक्ष होते हैं और जो इस ज्ञान और कौशल का प्रयोग दूसरों के हित के लिए करते हैं। प्रोफेशन का अर्थ ऐसे उद्यम से है, जिसमें लोकहित के लिए विशेष दक्षता, आत्म–निर्देशन, और संगठित होकर सेवा करने की आवश्यकता होती है।

(Profession is defined as any occupation/job/vocation that requires advanced expertise (skills and knowledge), self-regulation, and concerted service to the public good.)[1]

नीतिशास्त्र दर्शनशास्त्र की एक शाखा है। नीतिशास्त्र आचरण का नियामक विज्ञान है और आचरण ऐच्छिक क्रियाओं का ही सामूहिक नाम है।

(Ethics has been defined as the normative science of conduct, and conduct is collective name for voluntary actions).[2]

इस प्रकार मनुष्यों के ऐच्छिक कर्म ही नीतिशास्त्र के दायरे में आते हैं। इन्हीं कर्मो के लिए नीतिशास्त्र तय करता है कि अमुक कर्म उचित है या अनुचित है, शुभ है या अशुभ है, नैतिक है या अनैतिक है, वाँछनीय है या अवाँछनीय इत्यादि। इसीलिए नीतिशास्त्र पागलों और छोटे बच्चों पर लागू नहीं होता। नीतिशास्त्र के कई प्रकार हैं, जैसे– मानकीय नीतिशास्त्र, अधिनीतिशास्त्र. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र आदि। वस्तुतः अभी नीतिशास्त्र की जो विशेषता बतायी गई वही मानकीय नीतिशास्त्र है। अधिनीतिशास्त्र वह विधा है जो नैतिक भाषा, नैतिक संप्रत्ययों का अध्ययन, स्पष्टीकरण और विश्लेषण करती है। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics) नैतिक विचारों का व्यावहारिक प्रयोग है। प्रोफेशनल एथिक्स अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का ही एक दृष्टान्त है।

दोनों शब्दों का अलग अलग अर्थ जानने के बाद यदि इस सामूहिक शब्द प्रोफेशनल एथिक्स शब्द पर विचार करें तो सामान्य शब्दों में इसका अर्थ होगा कि किसी वृत्ति या प्रोफेशन के लिए मान्य आचार संहिता (Code of Conduct) ही वृत्तिक नीतिशास्त्र है। वृत्तिक नीतिशास्त्र का सम्बन्ध उन मानकों और नैतिक आचरण से है जो किसी वृत्ति और उसके सदस्यों को दिशा निर्देश देते हैं। कैम्ब्रिज डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी के अनुसार, वृत्तिक नीतिशास्त्र उन न्यायोचित नैतिक मूल्यों को इंगित करता है जो वृत्तिकों के कार्यों का नियमन करते हैं।

(Professional ethics**,** a term designating one or more of the justified moral values that should govern the work of professionals.)[3]

ये वृत्तिकों को दिशा निर्देश देते हैं। किसी वृत्ति में नैतिक संहिता एक मर्यादा तय करती है, जिसके अन्दर ही वृत्तिकों को रहना होता है। ये कर्तव्य–अकर्तव्य का बोध कराते हैं। किसी वृत्ति की आचार संहिता का तात्पर्य वृत्तिकों (जो कि कोई महत्वपूर्ण जनसेवा करते हैं, जैसे–स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा या कानूनी सलाह) और वे जो उनकी सेवा पर आश्रित होते हैं, उनके बीच का एक समझौता है। वृत्ति नीतिशास्त्र हमें सेवाबद्ध करते हैं, प्रोफेशनल विकास और निजी हित के बीच दूरी बनाये रखने में मदद करते हैं। हर वृत्ति की आदर्श आचार संहिता उस वृत्ति से जुड़े व्यक्ति और समाज के बीच के आचरण को नियमित करती है। नैतिकता किसी भी वृत्ति के लिए आवश्यक होती है। प्रत्येक वृत्ति की अपनी एक कार्य संस्कृति होती है, वह तभी मजबूत रहेगी जब प्रोफेशनल उससे संबंधित आचार संहिता का पालन करें। हर वृत्ति में कुछ आदर्श नैतिक मानदण्ड होते हैं जिन्हें व्यक्ति को अपने आचरण में उतारना होता है। हर वृत्ति में, जुड़े लोगों से एक अपेक्षा होती है। जब कोई व्यक्ति समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप अपने पेशेगत व्यवहार का आचरण प्रदर्शित करता है तब उसे उस एक वृत्ति का आदर्श प्रतिनिधि माना जाता है। हर वृत्ति का संगठन अपने सदस्यों के लिए आदर्श आचार संहिता विकसित करता है। यद्यपि यह आदर्श आचार संहिता हर वृत्ति में अलग–अलग होती है। जैसे–मेडिकलं, इंजीनियरिंग, कानून, शिक्षा आदि।

क्या अध्यापन एक वृत्ति है?

कभी–कभी यह प्रश्न भी उठता है कि क्या अध्यापन को वृत्ति कहा जा सकता है? इस सम्बन्ध में ब्रिटिश शिक्षा दार्शनिक डेविड कार (David Carr) द्वारा प्रतिपादित उन मानकों का विवेचन करना समीचीन होगा जो किसी वृत्ति के लिए आवश्यक हैं[4]–

1. *वृत्ति एक महत्वपूर्ण लोकसेवा प्रदान करते हैं*
2. *इसमें सैद्धांतिक और व्यावहारिक विशेज्ञता शामिल होती है।*
3. *उनके पास एक अलग प्रकार का नैतिक आयाम होता है जो वृत्तिकों के लिए एक दिशा–निर्देश का कार्य करते हैं।*
4. *भर्ती (Recruitment) और अनुशासन के लिए संगठन और विनियमन (Regulations) की आवश्यकता होती है।*
5. *प्रभावी अभ्यास के लिए वृत्तिकों को एक स्वतंत्र माहौल की आवश्यकता होती है।*

शिक्षण पहले मानदण्ड पर अच्छी तरह खरा उतरता है, क्योंकि यह विद्यार्थियों और समाज में निहित अज्ञानता को दूर करके जनसेवा का कार्य करता है। शेष मानदण्ड भी शिक्षण को वृत्ति के रूप में सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं। कनाडियन शिक्षाशास्त्री एलिजाबेथ कैम्पबेल (Elizabeth Campbell) का भी मानना है कि आज के ज्ञान–समाज में शिक्षण मुख्य वृत्ति है।[5]

अध्यापन वृत्ति में नैतिकता की आवश्यकता–

शिक्षण को एक आदर्श वृत्ति माना गया है। शिक्षण या अन्य किसी वृत्ति के लिए आचार संहिता मुख्यतः दो कारणों से आवश्यक होती है– पहला, उस वृत्ति में लोगों का विश्वास बनाए रखने के लिए और दूसरा, वृत्तिक आचरण का मार्गदर्शन करने के लिए। आचार संहिता पेशेवर उत्कृष्टता के साथ–साथ आत्म संतुष्टि प्रदान करती हैं। इसी आवश्यकता को देखते हुए आज इंजीनियरिंग, प्रबंधन, आदि के पाठ्यक्रमों में इसे शामिल किया गया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और UPPCS की परीक्षा के पाठ्यक्रम में इसे एक प्रश्नपत्र के रूप में रखा गया है। कारपोरेट जगत में इसकी झलक कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के रूप में दिखाई देती है। जहाँ तक शिक्षण वृत्ति की बात है तो इसकी आवश्यकता और बढ़ जाती है, क्योंकि शिक्षण वृत्ति अन्य वृत्तियों से पृथक है। एक उदाहरण के माध्यम से इसे हम समझ सकते हैं। मान लें कि कोई अभिभावक है जिसका बच्चा किसी रोग से पीड़ित है। वह उसके लिए चिकित्सीय सहायता की खोज में है तो वह संबंधित क्षेत्र के किसी कुशल व्यक्ति को खोजेगा। हालाँकि, यह सम्भव है कि वह विशेषज्ञ अपनी निजी जिन्दगी में नैतिक रूप से अच्छा न हो। अपनी निजी जिन्दगी में वह बेईमान, ईर्ष्यालु और दुराचारी है, मित्रों के साथ विश्वासघात करता है, अपनों का शोषण करता है, इत्यादि। यहाँ उस अभिभावक के लिए ये सब बातें मायने नहीं रखेगी, बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि उसके पास आवश्यक चिकित्सीय दक्षता है। वहीं दूसरी ओर, यदि अभिभावक अपने बच्चे की अच्छी शिक्षा के लिए किसी योग्य शिक्षक की तलाश में है और कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है जो अकादमिक ज्ञान और शैक्षिक गुणवत्ता में निपुण है, परन्तु वह झूठा, व्यभिचारी, निष्ठाहीन, कुटिल, कटुभाषी और बदमाश है तो वह अभिभावक उसकी योग्यता के रहते हुए भी अपने बच्चे को उस व्यक्ति के संरक्षण में रखने से परहेज करेगा। एक शिक्षक कक्षा के अन्दर और बाहर विभिन्न भूमिकाओं में होता है। वह अपने नैतिक आचरण से विद्यार्थियों में एक आदर्श स्थापित कर सकता है और उनमें नैतिकता विकसित कर सकता है। इस वजह से शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

प्राचीन काल से ही शिक्षक को सर्वोच्च दर्जा प्राप्त था। उपनिषद् बताते हैं कि गुरु ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। गुरु को पथप्रदर्शक कहा गया है। गुरु अज्ञान का नाशक है। अद्वयतारकोपनिषद् में कहा गया है कि 'गु' शब्द का अर्थ अंधकार होता है, 'रु' शब्द का अर्थ रोकने वाला या दूर करने वाला होता है और इस प्रकार जो अंधकार को दूर करता है उसे गुरु कहते हैं।

गुशब्दस्त्वन्धकारस्याद् रुशब्दस्तन्निरोधकः। अन्धकारनिरोधित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते।।[6]

गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, शिव जैसे त्रिदेव के समतुल्य रखा गया है। गुरु को परब्रह्म परमेश्वर माना गया है। मध्यकाल में भी कबीरदास और गोस्वामी तुलसीदास ने गुरुमहिमा का बखान किया है। कबीरदास ने तो गुरु का स्थान ईश्वर से भी उच्च बताया है।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय। बलिहारी गुरु आपने गोवन्द दियो बताय।[7]

वहीं तुलसीदास का कहना है कि साक्षात् भगवान भी गुरु के बिना भवसागर नहीं पार कर सकते हैं।

गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई। जो बिरंचि संकर सम होई।।[8]

इस तरह शिक्षक समाज में बहुत सम्मानित और उच्च स्थान पर स्थित था। परन्तु उस समय न तो शिक्षण कोई स्थापित वृत्ति थी और न ही शिक्षकों के लिए कोई औपचारिक नैतिक संहिता ही थी। शिक्षक प्रायः एक आध्यात्मिक व्यक्ति होता था। धीरे–धीरे शिक्षण एक वृत्ति का रूप लेता गया। लोग इसमें अपना करियर बनाने लगे। लेकिन ब्रिटिश काल से शिक्षकों की स्थिति में गिरावट दिखने लगी। शिक्षक एक वेतनभोगी कर्मचारी बनता जा रहा है। इसकी गहनता में जायंगे तो बहुत से नीतिगत और प्रशासनिक कारणों के साथ स्वयं शिक्षक की नैतिक जिम्मेदारियों पर भी प्रश्नचिह्न लगता दिखाई देता है। इस वजह से नीतिशास्त्रियों ने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रसार के साथ–साथ शिक्षकों पर भी ध्यान केन्द्रित किया। यही वजह है कि 1988 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने एक टॉस्क फोर्स गठित कर विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के अध्यापकों के लिए आचार संहिता का निर्माण किया, जो यूजीसी के रेगुलेशन 2018 में भी यथावत् विद्यमान है। 1997 में अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ (AIPTF) ने शिक्षकों के लिए एक आदर्श आचार संहिता तैयार की, जिसे 2007 में अनुमोदित किया गया। वहीं राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE) ने भी दिसम्बर 2010 में अध्यापकों के लिए आचार संहिता का निर्माण किया।

शिक्षण में वृत्ति नीतिशास्त्र की रूपरेखा–

एक शिक्षक के लिए वृत्तिक नीतिशास्त्र का सम्बन्ध नैतिकता के उन नियमों, दिशा–निर्देशों या मानदण्डों से है, जिसे वह विद्यार्थियों, सहकर्मियों, अभिभावकों, समुदाय, प्राधिकारी आदि से व्यवहार करते समय अपनाये। इस सम्बंध में यू0जी0सी0 का कहना है कि जो कोई भी शिक्षण को व्यवसाय के रूप में अपनाता है, उसका दायित्व होता है कि वह पेशे के आदर्शों के अनुरूप अपने आचरण को बनाए रखे। एक शिक्षक लगातार अपने छात्रों और समाज की समीक्षा के अधीन रहता है। इसलिए, प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी कथनी और करनी के बीच कोई भेद नहीं हो। पहले से ही निर्धारित शिक्षा के राष्ट्रीय आदर्शों और उन्हें छात्रों में प्रसार करना एक शिक्षक का स्वयं का आदर्श होना चाहिए। इस व्यवसाय में आगे यह भी आवश्यक है कि शिक्षक शांत, धैर्यवान, मिलनसार और मैत्रीपूर्ण स्वभाव का हो। इसके अतिरिक्त यह भी निर्देशित किया गया है कि एक शिक्षक को छात्र, सहयोगी शिक्षक, प्राधिकारी, शिक्षणेत्तर कर्मचारी, अभिभावक और समाज के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए।[9]

स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि ***1.*** *शिक्षक को किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य, धन, नाम और प्रतिष्ठा से प्रेरित होकर शिक्षण नहीं करना चाहिए। उसका कार्य मानवता के लिए विशुद्ध प्रेम से संचालित होना चाहिए।* ***2.*** *एक सच्चा शिक्षक वही है जो विद्यार्थियों के स्तर पर आकर उनसे संवाद करे।* ***3.*** *शिक्षक के लिए सहानुभूति का गुण आवश्यक*

है, *बिना इसके हम कभी अच्छा शिक्षण नहीं कर सकते। **4.** शिक्षक का अन्तःकरण पूर्णतया शुद्ध होना चाहिए, तभी उसके शब्दों का कोई मूल्य होगा।*[10]

यदि मूलभूत नीतिशास्त्रीय सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में देखें तो नैतिकता के प्रमुख आदर्श जैसे–मूल्य, सद्गुण, आत्मपूर्णता, कर्तव्य आदि समन्वित रूप से आदर्श आचार संहिता की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। ये आदर्श, मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने की बात करते हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने के क्रम में जर्मन दार्शनिक इमैनुअल कांट के नैतिकता के उस सूत्र का समर्थन करना उचित होगा जो कहता है कि, ''उस प्रकार कार्य करो कि स्वयं तुम में तथा दूसरों में निहित मानवता साधन मात्र न रहकर सदैव अपने आप में साध्य बनी रहे''।[11] यह नियम बताता है कि हमें स्वयं अपनी तथा दूसरों की स्वतंत्रता एवं प्रतिष्ठा का पूर्ण सम्मान करना चाहिए। शिक्षण के क्षेत्र में इसको इस रूप में रखा जा सकता है कि एक शिक्षक को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ–साथ स्वयं पर भी केन्द्रित होना चाहिए। एक शिक्षक अपने ज्ञान में वृद्धि करके, कार्यों में परिष्करण करके अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। यू0जी0सी0 ने अपने नैतिक दिशा निर्देश में कहा है कि एक शिक्षक को अध्ययन और शोध के माध्यम से लगातार पेशेवर विकास जारी रखने चाहिए; ज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए पेशेवर बैठकों, संगोष्ठियों, सम्मेलनों इत्यादि में भागीदारी करके मुक्त और मैत्रीपूर्ण विचार व्यक्त करने चाहिए।[12] दूसरी बात यह कि विद्यार्थी विद्यालय मात्र विषय और किताबें पढ़ने के लिए नहीं आता, बल्कि आचार व्यवहार भी सीखने आता है, अपने व्यक्तित्व को संवारने आता है। प्रतिदिन विद्यार्थी विभिन्न अध्यापकों के संपर्क में आते हैं, उनसे प्रभावित होते हैं। यदि कोई अध्यापक यथोचित और शिष्ट तरीके से व्यवहार करता है तो विद्यार्थी भी उसकी तरह बनने का प्रयास करते हैं। शिक्षक को रोल मॉडल, प्रेरणास्रोत, प्रोत्साहक और पथ–प्रदर्शक होना चाहिए। इसलिए शिक्षक के व्यक्तित्व का विकास बहुत आवश्यक है। जहाँ तक विद्यार्थियों का सम्बन्ध है तो इस सन्दर्भ में यूजीसी का कहना है कि एक शिक्षक को छात्रों को उनकी उपलब्धियों में और सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, उनके व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए और सामुदायिक कल्याण में योगदान देने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए, छात्रों के व्यवहार और क्षमताओं में अन्तर पहचान कर उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। NCTE का कहना है कि एक शिक्षक को विद्यालयी जीवन के सभी पहलुओं में बच्चे के बुनियादी मानवीय गरिमा का सम्मान करना चाहिए।[13] साध्यता के इस सूत्र की झलक यूजीसी के उस कथन में भी दिखाई पड़ती है जिसमें कहा गया है कि शिक्षक को पेशे से जुड़े अन्य सदस्यों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह स्वयं के साथ पसंद करेंगे। जहाँ तक मूल्य नैतिकता की बात है तो इसके अन्तर्गत कहा जा सकता है कि ***1.** शिक्षक को अपने वृत्ति और विद्यार्थियों के प्रति अच्छा व्यवहार और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। **2.** शिक्षक को अपने उद्देश्य के प्रति जागरुक होना चाहिए। उन्हें सक्रिय होकर विद्यालय और विद्यार्थियों के प्रति सेवा प्रदान करनी चाहिए। **3.** शिक्षक को अपने प्रोफेशनल हित और निजी हितों के बीच एक दूरी बनाकर रखनी चाहिए। **4.** एक शिक्षक को सांस्कृतिक मूल्यों, विभिन्नताओं, सामाजिक न्याय,*

स्वतंत्रता, लोकतंत्र और पर्यावरण आदि के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। 5. शिक्षक को अपने सभी विद्यार्थियों के प्रति निष्कपट होना चाहिए। अपनी पदस्थिति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। अपने किसी विश्वास या विचारधारा को नहीं थोपना चाहिए। 6. एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के प्रति न्यायपूर्ण और निष्पक्ष रवैया अपनाना चाहिए। उनके साथ जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष– इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक वृत्ति के अपने कुछ मूल्य होते हैं, आचार नीतियां होती हैं। शिक्षण वृत्ति के भी अपने आचार हैं। नैतिक आचार संहिता का दृढ़ता से पालन करने से शिक्षकों के स्तर और आत्म–प्रतिष्ठा को बढ़ाने में योगदान किया जा सकता है तथा समाज में इस वृत्ति के प्रति सम्मान की भावना बढ़ाई जा सकती है। छात्रों, अभिभावकों, समाज और राष्ट्र, वृत्ति, सहकर्मियों, शिक्षणेत्तर कार्मिकों, प्रबंधन और प्रशासन के समक्ष उच्चतम स्तर का नैतिक व्यवहार अपनाना और प्रदर्शित करना शिक्षकों का दायित्व है।

सन्दर्भ और टिप्पणी

1. Naagarazan, R.S. (2006): *A Textbook On Professional Ethics and Human Values*, New Age International (P) Limited Publishers, New Delhi, P. 29
2. Lillie, William (2007): *An Introduction to Ethics*, Surjeet Publications, Delhi. P. 3
3. Audi, Robert (1999)*: The Cambridge Dictionary of Philosophy* (Ed.), Cambridge University Press, New York, P. 782
4. Carr, David (2000): *Professionalism and Ethics in Teaching*, Routledge, London and New York, P. 23
5. Campbell, Elizabeth (2003): *The Ethical Teacher*, Open University Press, Maidenhead Philadelphia, P. ix
6. पाण्डेय, संगमलाल (2002): *मूल शांकरवेदान्त*, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, पृ0 5
7. कबीर साखी संग्रह (संकलन) (1959), वेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद, दोहा–10
8. तुलसीदास (सं0 2073): *श्रीरामचरितमानस* (टीकाकार–हनुमान प्रसाद पोद्दार), गीताप्रेस, गोरखपुर, उत्तरकाण्ड
9. https://www.ugc.ac.in/oldpdf/pub/report/5.pdf, Accessed on 29 June 2020.
10. Avinashilingam, T. S. (Ed.)*: Education: Compiled From The Speeches and Writings of Swami Vivwkananda*, Sri Ramakrishna Math Printing Press, Madras, P. 32
11. वर्मा, वेदप्रकाश (2014): *नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत*, ऍलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ0 231
12. https://www.ugc.ac.in/oldpdf/pub/report/5.pdf, Accessed on 29 June 2020.
13. https://rajanmittalclasses.files.wordpress.com/2019/02/approved-by-cp-final-code-of-professional-ethics-7-feb-11.pdf, Accessed on 29 June 2020.